Fi – यीशु ने अंधों और गूंगों को चंगा करता है मत्ती ९:२७-३४ |
1

– Save This Page as a PDF–

यीशु ने अंधों और गूंगों को चंगा करता है

मत्ती ९:२७-३४

खोदाई: अंधों द्वारा यीशु के लिए प्रयुक्त उपाधि का क्या अर्थ है? उन्होंने विश्वास कैसे दिखाया? यीशु क्यों चाहता था कि वे चुप रहें? यीशु की शक्ति पर भीड़ की क्या प्रतिक्रिया थी? फरीसियों ने कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की? अंतर क्यों?

चिंतन करें: यदि हम विश्वास से जीते हैं, न कि दृष्टि से (दूसरा कुरिन्थियों ५:७), तो किस तरह से आप अभी भी आंशिक रूप से अंधे या आध्यात्मिक रूप से मूक हो सकते हैं? येशुआ बेन डेविड आपको पूर्ण दृष्टि और भाषण कैसे दे सकता है?

यशायाह ने उन आशीषों का वर्णन किया जो मसीहा द्वारा लाए जाएंगे: तब अंधों की आंखें खोली जाएंगी और बहरों के कान खोले जाएंगे। तब लंगड़ा हिरन की नाईं उछलेगा, और गूंगा जीभ से जयजयकार करेगा। जंगल में जल और मरूभूमि में नदियाँ फूट पड़ेंगी (यशायाह ३५:५-६)। यीशु इस दिन ऐसे दो चमत्कार करेंगे, लेकिन वे जनता के लाभ के लिए नहीं होंगे। महासभा द्वारा उनकी अस्वीकृति के बाद (देखें Lg– महान महासभा) उनके मंत्रालय का फोकस बदल गया (En– क्राइस्ट के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)। प्रभु के चमत्कारों का उद्देश्य अब उनके प्रेरितों के लाभ के लिए होगा। यीशु जानते थे कि उनकी मृत्यु के बाद वे तितर-बितर हो जायेंगे और उनमें कई संदेह होंगे। लेकिन वह चाहता था कि वे उसके मसीहाई चमत्कारों को याद रखें ताकि उसके पुनरुत्थान के बाद उस पर अपना विश्वास नवीनीकृत कर सकें।

जब मसीहा याइर की बेटी को मरे हुओं में से जीवित करने के बाद कफरनहूम में याइर के घर से चला गया, तो यीशु वहाँ से चला गया और दो अंधे उसके पीछे चले गए, और चिल्लाते हुए कहा, “दाऊद के पुत्र, हम पर दया करो (मत्ती ९:२७)! उन्होंने जिस शीर्षक का उपयोग किया वह तानाख (२ शमूएल ७:१-१६; भजन ११०) में कई स्थानों पर एक मजबूत मसीहाई पदनाम है, और यह पहली बार येशुआ के लिए उपयोग किया गया था। रब्बियों ने सिखाया कि यह एक मसीहाई शब्द है, जिसे राजा डेविड के वंशज की ओर निर्देशित करने की आवश्यकता है और इसलिए इसे मेशियाच बेन-डेविड, या डेविड का मसीहा पुत्र कहा जाता है (ट्रैक्टेट सुक्का ५२ए)। दया के लिए पुरुषों के अनुरोध के दो-तरफा अर्थ हो सकते हैं, भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र दोनों में।

अंधे लोग सही व्यक्ति के पास आये, क्योंकि यीशु मसीह देह में दयालु थे। वह अब तक

Fi – यीशु ने अंधों और गूंगों को चंगा करता है मत्ती ९:२७-३४ |
2

का सबसे दयालु व्यक्ति था। वह अपंगों के पास पहुंचे और उन्हें चलने के लिए पैर दिए। उसने अंधों की आंखें, बहिरों के कान, और गूंगों का मुंह चंगा किया। उसने वेश्याओं और महसूल लेने वालों को और भ्रष्ट और शराबी लोगों को पाया, और उसने उन्हें अपने प्रेम के घेरे में खींच लिया और उन्हें छुड़ाया और उनके पैरों पर खड़ा किया। इस एक की दया से पृथ्वी पर कभी कोई व्यक्ति नहीं हुआ।

अपनी अस्वीकृति से पहले यीशु ने जनता के लाभ के लिए चमत्कार किए और विश्वास का प्रदर्शन करने के लिए नहीं कहा, लेकिन उसके बाद, उन्होंने केवल व्यक्तिगत आवश्यकता और विश्वास के प्रदर्शन के आधार पर चमत्कार किए। इसलिए जोर विश्वासबिहीन भीड़ से हटकर विश्वास वाले व्यक्तियों पर केंद्रित हो गया। यह तथ्य कि वे पापियों के उद्धारकर्ता से दया की माँग कर रहे थे, व्यक्तिगत आवश्यकता को दर्शाता है। लेकिन वह जनता के लिए चमत्कार नहीं कर रहे थे, इसलिए उन्होंने शुरू में सार्वजनिक रूप से कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

किसी तरह उनकी मदद की गई और वे पतरस के घर पहुँचे जहाँ यीशु रह रहे थे। इस बिंदु पर, यीशु ने केवल व्यक्तिगत आवश्यकता के आधार पर चमत्कार किये। लेकिन चमत्कार विश्वास के आधार पर होने चाहिए, इसलिए उन्होंने उनसे सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा: क्या आप विश्वास करते हैं कि मैं आपको देख सकता हूँ? “हाँ, प्रभु,” उन्होंने उससे कहा, हम करते हैं” (मत्ती ९:२८ एनएलटी)। फिर से उन्होंने उन्हें प्रभु की मसीहाई उपाधि से संबोधित किया।



तब स्वयं-घोषित विश्वास उपचारकों के साथ इतनी आम
धूमधाम या सतही नाटक के बिना, उसने बस उनकी आँखों को छुआ और कहा: तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे साथ किया जाएगा, और उनकी दृष्टि बहाल हो गई (मत्ती ९:२९)। मसीह के दिनों में लोगों ने पहले उसके व्यक्तित्व पर और फिर उसके वचन पर विश्वास करना सीखा; अनुग्रह के वितरण में (इब्रानियों पर मेरी टिप्पणी देखें), हम पहले उसके वचन पर विश्वास करना सीखते हैं, और फिर उसके व्यक्तित्व पर।

यीशु अब इस्राएल राष्ट्र के लिए अपने मसीहापन को प्रमाणित करने के लिए चमत्कार

Fi – यीशु ने अंधों और गूंगों को चंगा करता है मत्ती ९:२७-३४ |
3

नहीं कर रहे थे, इसलिए उन्होंने उन्हें कड़ी चेतावनी दी: देखें कि किसी को भी इसके बारे में पता न चले (मत्ती ९:३०)। परन्तु वे अपने आप को न रोक सके, और बाहर जाकर उस सारे देश में उसका समाचार फैला दिया (मत्ती ९:३१)। लेकिन इन कुछ को छोड़कर, कफरनहूम में प्रतिक्रिया कुछ भी नहीं थी। इससे उनका ही नुकसान होगा.

यह चमत्कार न केवल मेशियाक के व्यक्तित्व का रहस्योद्घाटन था, क्योंकि केवल ईश्वर ही अंधी आँखों को दृष्टि प्रदान कर सकता था, बल्कि यह भी संकेत दिया कि प्रभु इस्राएल के लिए क्या करने आये थे। यहूदी आध्यात्मिक रूप से अंधे थे और यहोवा को नहीं जानते थे। मसीहा उन पर हाशेम प्रकट करने आया। किसी ने कभी भी परमेश्वर को नहीं देखा है, परन्तु एकमात्र पुत्र ने, जो स्वयं परमेश्वर है और पिता के साथ निकटतम सम्बन्ध रखता है, उसे ज्ञात कराया है (यूहन्ना १:१८)। परन्तु इस्राएल ने उस पर विश्वास न किया, इस कारण उसका अन्धापन दूर न हुआ। ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार उस पर प्रबल नहीं हुआ (यूहन्ना १:५)। भले ही वह लंबे समय से वादा किया गया मसीहा है और इज़राइल के राष्ट्र के लिए पिता को प्रकट कर सकता है, उसके आने से तब तक कोई लाभ नहीं होगा जब तक राष्ट्र, इन अंधे लोगों की तरह, विश्वास में उसके पास नहीं आ जाता।

जब यीशु पतरस के घर से निकल रहा था, तो एक व्यक्ति जिसमें दुष्टात्मा थी और वह बोल नहीं सकता था, यीशु के पास लाया गया (मत्ती ९:३२)। मूक होना (ग्रीक: कोफोस) में अक्सर बहरेपन का विचार शामिल होता है (मत्ती ११:५), क्योंकि बोलने में असमर्थता अक्सर सुनने में असमर्थता के कारण होती है। हालाँकि, इस आदमी के मामले में, उसके मूक होने का कारण यह था कि वह दुष्टात्मा से ग्रस्त था। और जब दुष्टात्मा निकाली गई, तो वह मनुष्य जो गूंगा था बोल उठा। यह यशायाह ३५ का एक और मसीहाई चमत्कार था।

भीड़ चकित हो गई और कहने लगी, “इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया” (मत्ती ९:३३)। इस्राएल में ऐसा कुछ कभी नहीं देखने का कारण यह था कि मसीहा पहले कभी नहीं आया था। वह यहूदी इतिहास में ऐसा करने वाले पहले व्यक्ति थे।

परन्तु फरीसी कहते रहे: वह दुष्टात्माओं के सरदार के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता है (मत्ती ९:३४)। इसके विपरीत सभी सबूतों के बावजूद उनके दिल परमेश्वर के पुत्र और उसके मसीहा संबंधी दावों के प्रति कठोर होते रहे। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, उनकी दुश्मनी और भी कड़वी होती गई। ज्योति अन्धियारे में चमकती है, परन्तु अन्धियारा कुछ नहीं समझता (यूहन्ना १:५)।

“मुझे धर्म के साथ विज्ञान की समस्या के बारे में समझाने दीजिए।” दर्शनशास्त्र का नास्तिक प्रोफेसर अपनी कक्षा के सामने रुकता है और फिर अपने एक नए छात्र को खड़े होने के लिए कहता है।

Fi – यीशु ने अंधों और गूंगों को चंगा करता है मत्ती ९:२७-३४ | 4

“तुम ईसाई हो, है ना बेटा?”

“हाँ सर,” छात्र कहता है।

“तो आप ईश्वर में विश्वास करते हैं?”

“बिल्कुल।”

“क्या ईश्वर अच्छा है?”

“ज़रूर! परमेश्वर अच्छा है।”

“क्या ईश्वर सर्वशक्तिमान है? क्या परमेश्वर कुछ कर सकते हैं?”

“हाँ”

“आप अच्छे हैं या बुरे?”

“बाइबिल कहती है कि मैं बुरा हूँ,” छात्र ने उत्तर दिया।

प्रोफ़ेसर जानबूझकर मुस्कुराया। “अहा! बाइबल!” वह एक पल के लिए विचार करता है. “यहाँ आपके लिए एक है। मान लीजिए कि यहां कोई बीमार व्यक्ति है और आप उसे ठीक कर सकते हैं। आप यह कर सकते हैं। क्या आप उसकी मदद करेंगे? क्या आप कोशिश करेंगे?”

“हां सर, मैं करूंगा।”

“तो तुम अच्छे हो. . . !” प्रोफेसर ने सोचा कि वह उसके पास है।

“मैं ऐसा नहीं कहूंगा।”

“लेकिन ऐसा क्यों नहीं कहते? यदि आप कर सकते हैं तो आप किसी बीमार और अपंग व्यक्ति की मदद करेंगे। यदि हम कर सकें तो हममें से अधिकांश लोग ऐसा करेंगे। लेकिन परमेश्वर ऐसा नहीं करते।”

छात्र उत्तर नहीं देता, इसलिए प्रोफेसर जारी रखते हैं। “नहीं करता है, करता है क्या? मेरा भाई एक ईसाई था जो कैंसर से मर गया, भले ही उसने उसे ठीक करने के लिए यीशु से प्रार्थना की। यह यीशु कैसे अच्छा है? हम्म? क्या आप इसका उत्तर दे सकते हैं?” उसने मांग की।

छात्र चुप रहा.

Fi – यीशु ने अंधों और गूंगों को चंगा करता है मत्ती ९:२७-३४ |
5

“नहीं, आप नहीं कर सकते, क्या आप कर सकते हैं?” प्रोफेसर कहते हैं. छात्र को आराम करने का समय देने के लिए उन्होंने अपनी मेज पर रखे एक गिलास से पानी का एक घूंट लिया।

“आइए फिर से शुरू करें, युवा मित्र। क्या ईश्वर अच्छा है?”

“एर. . . हाँ,” छात्र कहता है।

प्रोफेसर ने पूछा, “क्या शैतान अच्छा है?”

छात्र ने इस पर भी संकोच नहीं किया। “नहीं।”

“फिर शैतान कहाँ से आता है?”

छात्र लड़खड़ा गया. “परमेश्वर से”

“यह सही है। परमेश्वर ने शैतान को बनाया, है ना? बताओ बेटा. क्या इस दुनिया में बुराई है?”

“जी श्रीमान।”

“बुराई हर जगह है, है ना? और परमेश्वर ने सब कुछ सही किया?”

“हाँ”

“तो बुराई किसने रची?” प्रोफेसर ने आगे कहा, “यदि ईश्वर ने सब कुछ बनाया, तो ईश्वर ने बुराई भी बनाई, क्योंकि बुराई मौजूद है, और इस सिद्धांत के अनुसार कि हमारे कार्य परिभाषित करते हैं कि हम कौन हैं, तो ईश्वर दुष्ट है।”

फिर, छात्र के पास कोई जवाब नहीं है। “बीमारी है क्या? अनैतिकता? घृणा? कुरूपता? ये सभी भयानक चीज़ें, क्या वे इस दुनिया में मौजूद हैं?”

छात्र थोड़ा सा छटपटाता है। “हाँ।”

“तो उन्हें किसने बनाया?”

छात्र दोबारा उत्तर नहीं देता, इसलिए प्रोफेसर अपना प्रश्न दोहराता है। ‘उन्हें किसने बनाया?’ अभी भी कोई उत्तर नहीं है. अचानक प्रोफेसर ने कक्षा की ओर मुंह किया। कक्षा मंत्रमुग्ध है. “मुझे बताओ,” वह दूसरे छात्र से बात करना जारी रखता

Fi – यीशु ने अंधों और गूंगों को चंगा करता है मत्ती ९:२७-३४ |
6

है।

“क्या तुम यीशु मसीह में विश्वास करते हो, बेटे?”

छात्र की आवाज उसे धोखा देती है और टूट जाती है। “हाँ, प्रोफेसर, मैं जानता हूँ।”

बूढ़े ने चलना बंद कर दिया। “विज्ञान कहता है कि आपके पास पाँच इंद्रियाँ हैं जिनका उपयोग आप अपने आस-पास की दुनिया को पहचानने और निरीक्षण करने के लिए करते हैं। क्या तुमने कभी यीशु को देखा है?”

“नहीं साहब। मैंने उसे कभी नहीं देखा।”

“तो फिर हमें बताएं कि क्या आपने कभी अपने यीशु को सुना है?”

“नहीं सर, मैंने नहीं किया है।”

“क्या तुमने कभी अपने यीशु को महसूस किया है, अपने यीशु को चखा है या अपने यीशु की गंध महसूस की है? क्या आपको कभी यीशु मसीह या ईश्वर के बारे में कोई संवेदी अनुभूति हुई है?”

“नहीं, सर, मुझे डर है कि मैंने ऐसा नहीं किया।”

“फिर भी, आप अभी भी उस पर विश्वास करते हैं?”

“हाँ।”

“अनुभवजन्य, परीक्षण योग्य, प्रदर्शन योग्य प्रोटोकॉल के नियमों के अनुसार, विज्ञान कहता है कि आपका ईश्वर अस्तित्व में नहीं है। तुम उससे क्या कहते हो, बेटा?”

“कुछ नहीं,” छात्र जवाब देता है। “मेरे पास केवल मेरा विश्वास है।”

“हाँ, विश्वास,” प्रोफेसर दोहराते हैं। “और विज्ञान की ईश्वर के साथ यही समस्या है। कोई सबूत नहीं है, केवल विश्वास है।”

छात्र अपना प्रश्न पूछने से पहले एक पल के लिए चुपचाप खड़ा रहता है। “प्रोफेसर, क्या गर्मी जैसी कोई चीज़ होती है?”

“हाँ।”

“और क्या ठंड जैसी कोई चीज़ होती है?”

Fi – यीशु ने अंधों और गूंगों को चंगा करता है मत्ती ९:२७-३४ |
7

“हाँ बेटा, ठण्ड भी बहुत है।”

“नहीं सर, ऐसा नहीं है।”

प्रोफेसर स्पष्ट रूप से रुचि रखने वाले छात्र की ओर मुड़ता है।

कमरा अचानक बहुत शांत हो जाता है. छात्र समझाने लगता है.

‘आपके पास बहुत अधिक गर्मी हो सकती है, उससे भी अधिक गर्मी, सुपर-हीट, मेगा-हीट, असीमित गर्मी, सफेद गर्मी, थोड़ी गर्मी या कोई गर्मी नहीं, लेकिन हमारे पास ‘ठंडा’ नाम की कोई चीज नहीं है। हम शून्य से 458 डिग्री नीचे तक पहुंच सकते हैं, जो कोई गर्मी नहीं है, लेकिन हम उसके बाद आगे नहीं जा सकते। ठंड नाम की कोई चीज़ नहीं है; अन्यथा हम न्यूनतम – ४५८ डिग्री से भी अधिक ठंडे तापमान में जाने में सक्षम होंगे।’

“प्रत्येक शरीर या वस्तु अध्ययन के लिए अतिसंवेदनशील होती है जब उसमें ऊर्जा होती है या संचारित होती है, और गर्मी वह है जो शरीर या पदार्थ को ऊर्जा प्रदान करती है या ऊर्जा संचारित करती है। परम शून्य (-४५८ एफ) ऊष्मा की पूर्ण अनुपस्थिति है। आप देखिए, श्रीमान, ठंड केवल एक शब्द है जिसका उपयोग हम गर्मी की अनुपस्थिति का वर्णन करने के लिए करते हैं। हम ठंड को माप नहीं सकते. ऊष्मा को हम तापीय इकाइयों में माप सकते हैं क्योंकि ऊष्मा ऊर्जा है। ठंड गर्मी का विपरीत नहीं है, सर, बस इसकी अनुपस्थिति है।

पूरे कमरे में सन्नाटा. एक कलम कक्षा में कहीं गिरती है, हथौड़े की तरह आवाज करती है।

“अंधेरे के बारे में क्या, प्रोफेसर। क्या अंधकार जैसी कोई चीज़ होती है?”

“हाँ,” प्रोफेसर बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर देता है। “अगर यह अंधेरा नहीं है तो रात क्या है?”

“आप फिर ग़लत हैं, सर। अंधेरा कुछ नहीं है; यह किसी चीज़ का अभाव है. आपके पास कम रोशनी, सामान्य रोशनी, तेज रोशनी, चमकती रोशनी हो सकती है, लेकिन अगर आपके पास लगातार कोई रोशनी नहीं है तो आपके पास कुछ भी नहीं है और इसे अंधेरा कहा जाता है, है ना? यही वह अर्थ है जिसका उपयोग हम शब्द को परिभाषित करने के लिए करते हैं।

“वास्तव में, अंधेरा नहीं है। यदि ऐसा होता, तो आप अंधकार को और अधिक गहरा कर पाते, है न?”

प्रोफेसर अपने सामने छात्र को देखकर मुस्कुराने लगता है। यह एक अच्छा सेमेस्टर

Fi – यीशु ने अंधों और गूंगों को चंगा करता है मत्ती ९:२७-३४ |
8

होगा. “तो आप क्या मुद्दा बना रहे हैं, जवान आदमी?”

“हाँ, प्रोफेसर। मेरा कहना यह है कि आपका दार्शनिक आधार शुरू से ही त्रुटिपूर्ण है, और इसलिए आपका निष्कर्ष भी त्रुटिपूर्ण होना चाहिए।

प्रोफेसर का चेहरा इस बार अपना आश्चर्य छिपा नहीं पा रहा है। “त्रुटिपूर्ण? क्या आप बता सकते हैं कैसे?”

छात्र बताते हैं, ”आप द्वंद्व के आधार पर काम कर रहे हैं।” ‘आप तर्क करते हैं कि जीवन है और फिर मृत्यु है; एक अच्छा परमेश्वर और एक बुरा परमेश्वर. आप ईश्वर की अवधारणा को एक सीमित चीज़ के रूप में देख रहे हैं, जिसे हम माप सकते हैं। सर, विज्ञान किसी विचार की भी व्याख्या नहीं कर सकता।”

“यह बिजली और चुंबकत्व का उपयोग करता है, लेकिन किसी को भी कभी नहीं देखा है, पूरी तरह से समझा तो दूर की बात है। मृत्यु को जीवन के विपरीत के रूप में देखना इस तथ्य से अनभिज्ञ होना है कि मृत्यु एक वास्तविक चीज़ के रूप में मौजूद नहीं हो सकती। मृत्यु जीवन के विपरीत नहीं है, केवल उसकी अनुपस्थिति है।”

“अब मुझे बताओ, प्रोफेसर। क्या आप अपने विद्यार्थियों को सिखाते हैं कि वे बंदर से विकसित हुए हैं?”

“यदि आप प्राकृतिक विकासवादी प्रक्रिया की बात कर रहे हैं, तो युवा व्यक्ति, हाँ, निश्चित रूप से मैं ऐसा करता हूँ।”

“क्या आपने कभी विकास को अपनी आँखों से देखा है, श्रीमान?”

प्रोफेसर अपना सिर हिलाना शुरू कर देता है, फिर भी मुस्कुराता है, क्योंकि उसे एहसास होता है कि तर्क कहाँ जा रहा है। वास्तव में एक बहुत अच्छा सेमेस्टर।

“चूँकि किसी ने कभी भी विकास की प्रक्रिया को काम में नहीं देखा है और यह भी साबित नहीं कर सका कि यह प्रक्रिया एक सतत प्रयास है, क्या आप अपनी राय नहीं सिखा रहे हैं, श्रीमान? क्या अब आप वैज्ञानिक नहीं, बल्कि उपदेशक हैं?”

क्लास में हंगामा मच गया. हंगामा शांत होने तक छात्र चुप रहता है.

“जो बात आप पहले दूसरे छात्र से कह रहे थे उसे जारी रखने के लिए, मैं आपको एक उदाहरण देता हूं कि मेरा क्या मतलब है।”

छात्र ने कमरे के चारों ओर देखा। “क्या कक्षा में कोई ऐसा है जिसने कभी प्रोफेसर का मस्तिष्क देखा हो?” कक्षा हँसी से गूंज उठी।

Fi – यीशु ने अंधों और गूंगों को चंगा करता है मत्ती ९:२७-३४ |
9

“क्या यहाँ कोई है जिसने कभी प्रोफेसर के मस्तिष्क को सुना हो, प्रोफेसर के मस्तिष्क को महसूस किया हो, प्रोफेसर के मस्तिष्क को छुआ हो या सूंघा हो? ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने भी ऐसा नहीं किया है। तो, अनुभवजन्य, स्थिर, प्रदर्शन योग्य प्रोटोकॉल के स्थापित नियमों के अनुसार, विज्ञान पूरे सम्मान के साथ कहता है, श्रीमान, कि आपके पास कोई मस्तिष्क नहीं है।

“तो अगर विज्ञान कहता है कि आपके पास दिमाग नहीं है, तो हम आपके व्याख्यानों पर कैसे भरोसा कर सकते हैं, सर?”

अब कमरे में सन्नाटा है. प्रोफेसर बस छात्र को देखता रहता है, उसका चेहरा पढ़ने में नहीं आता।

अंततः, अनंत काल के बाद, बूढ़ा व्यक्ति उत्तर देता है। “मुझे लगता है आपको उन्हें विश्वास पर लेना होगा।”

“अब, आप स्वीकार करते हैं कि विश्वास है, और, वास्तव में, विश्वास जीवन के साथ मौजूद है,” छात्र आगे कहता है। “अब, श्रीमान, क्या बुराई जैसी कोई चीज़ होती है?”

अब अनिश्चित, प्रोफेसर ने जवाब दिया, “बेशक, वहाँ है। हम इसे रोज देखते हैं. यह मनुष्य की मनुष्य के प्रति अमानवीयता का दैनिक उदाहरण है। दुनिया में हर जगह अपराध और हिंसा का बोलबाला है। ये अभिव्यक्तियाँ बुराई के अलावा और कुछ नहीं हैं।”

इस पर छात्र ने उत्तर दिया, “बुराई का अस्तित्व नहीं है सर, या कम से कम इसका स्वयं कोई अस्तित्व नहीं है। बुराई केवल ईश्वर की अनुपस्थिति है। यह बिल्कुल अंधेरे और ठंड की तरह है, एक शब्द जिसे मनुष्य ने परमेश्वर की अनुपस्थिति का वर्णन करने के लिए बनाया है। परमेश्वर ने बुराई नहीं बनाई. जब मनुष्य के हृदय में ईश्वर का प्रेम मौजूद नहीं होता तो जो घटित होता है उसका परिणाम बुराई है। यह उस ठंड की तरह है जो गर्मी नहीं होने पर आती है या अंधेरा तब आता है जब रोशनी नहीं होती है।”

प्रोफेसर बैठ गये. क्योंकि हम रूप से नहीं, विश्वास से जीते हैं (२ कुरिन्थियों ५:७)।

आधुनिक संस्कृति में, इस किस्से का श्रेय अक्सर अल्बर्ट आइंस्टीन को दिया जाता है।